

२१२९ वा. अध्याय.

पान - ६४



श्रीक - २१५ १०६५ -

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीरामपरमात्मने नमः ॥ श्रीगुरुपरः ब्रह्मणे नमः ॥ श्रीगुरु ॥
 ॐ नमो सद्गुरुदयार्णव ॥ तुल्ये कृपे सीनाहिधाव ॥ कृपे ले तारि सी जीव ॥ जीव भाव
 सातु नि ॥ सातु उ नि देह बुद्धि ॥ निरसु नी जिवो पाधि ॥ भक्त तारि सी भवा धी ॥ कृ
 पानिधि कृपा कुवा ॥ तुल्ये पाहाता कृपा कुपण ॥ जीवा सि जीवे मारि सि पूर
 नाम रूपा धालि सि शृंग्य ॥ जानी गोत संसर्ग नीर्द्वी सी ॥ नीर्द्वी कुनी आपपरा
 निसंतान करि सि संसारा ॥ सोनु जीव न सोई रा ॥ कृपा कु स्वरा चउ के वि
 जे विअंधारे नांदे दृष्टि ॥ भासने न स्वरा त कोटि ॥ ते ते आधारे सी स्त
 यो घोडि ॥ ते विनु सि भेदि साधक ॥ तुल्ये सिने थे साचार भेदि ॥ तुल्ये के लिया
 कृपा दृष्टि ॥ संसार भेदा वि त्रिपुटि ॥ त्रिगुणा सि श्रद्धि दिसे ना ॥ न देउ
 नीगुणा दि श्रद्धि दा वि सि आद्वय ब्रह्म दृष्टि ॥ सासिक दान के दृष्टि भेदि भे
 दि सिनुटि क दान के ॥ जो क दान दे खिजे दृष्टि ॥ सासिके वि होय भेदि

भेदिसि क हान पडे तुदि ॥ हे हि गोदि घडे के वि ॥ जै सागं भु माते न्या पोदि ॥
 अस्तु निमाउ लिने देखे ॥ तदिति ने भेदिसी नं हे तुदि ॥ ते विनु से पोदिसा ध
 का ॥ माता क व व को निपा की ताने ॥ से रवी ने माउ लिने ले ते विनु ज मा जि आ
 शाने ॥ तुवा प्रतिपा वणे निज को मे ॥ जं म ला बा व का कारे ॥ माता बा व
 विशा हान पड़े ॥ ते विनु से नि निज शाने ॥ सं शान हो ले सा ध की ॥ ११ ॥ सा
 ध कि ला हान तु से शान ॥ ते ने मा वि नीनु पा ॥ जी उ विसर ला जि व पा ॥
 आ द्य प पू ले पर मासा ॥ १२ ॥ आ सा नु या ब ड न या गो दि ॥ न क ता सं दुर
 क पा दृ शि ॥ क रि ता उ पा या न्या के दि नं दे भे दि पर मा र्थि ॥ १३ ॥ जालिया
 स डुर क पा दृ वि ॥ सा ध ने ल प ति उ टा उ दि ब्रं हान नं दे को दे श्ट वि ॥ स्या
 नं द मु खि सा ध का ॥ १४ ॥ जालिया सं डुर क पा प्रा प्त ॥ उप नि ष द्ध चा
 म थी तार्थ ॥ सा ध का चा चं डे हा न ॥ क पा स म र्थे गुरु नि ॥ १५ ॥ स डुर क
 पा स म र्थ ॥ गुरु क पा श्री भा ग व त्त ॥ वी र व नि ले जि प्रा क्त ॥ शुं ड म थी ॥ १६ ॥

राम ॥

राम ॥

॥ ११ ॥

॥ ११ ॥

तार्थसोत्थिव ॥ १६ ॥ जनार्दन ललाटस्थि ॥ मास्या महाव्या आरिखा गोप्ति ॥ रिधा
 न्या ॥ येकादशा न्या पोष्टि ॥ स्वानंद तुष्टि निज बोधे ॥ १७ ॥ संकत प्राक्नुन पा
 र्वंति ॥ सशान्तुंष्टि ॥ सेविनि स्वानंद गोप्ति ॥ गायका विजाणि तावति ॥ प्र
 रिदुधी वाकुडि च विनाहि ॥ १८ ॥ नेवि संकत प्राक्कत भावत्वा ॥ ब्रंहासिपा
 नटनाहि देखा ॥ उभय अभेद वदताये का ॥ साह्य निज सखा जनार्दन ॥ १९ ॥
 जनार्दन हृदये सवजाण ॥ अष्ट विंशति निरोपण ॥ गुंष्टु गंभीर स्वानंद
 धन ॥ तेहि केले व्याख्यान आति सुंदर ॥ २० ॥ तेथे नाना विध उपपत्ति ॥ नि
 ज बोधे साधु नियुक्ति ॥ स्वये बोधे शरीर पत्ति ॥ ब्रंहासिनि निष्ठक ॥ २१ ॥
 ब्रंहा अद्वैते परिपूर्ण ॥ तेथे हेतु मातु अनुमान ॥ तरि बुद्धि उक्ति सिमन
 अगंम्य जाण सवोधि ॥ २२ ॥ नाही दृश्या दृष्ट दर्शन नाहि ध्यय ध्याता ध्या
 ना कर्मकर्ता कारण ॥ मीतु पण असेना ॥ २३ ॥ उक्तिने सावित्र्या प्राण ॥ दृ
 ष्ठांति वाईली आण ॥ प्रमाने जालि अप्रमान ॥ बोधे सोक्षीन विवेक जाल ॥ २४ ॥
 तेथे बोधनामौन ॥ आकार नाशुंन्या ॥ गुण आणि निर्गुण ॥ समुज जाण आसेना ॥ २५ ॥

ऐसी ब्रह्माचरि निजस्थिति ॥ एकदम कपा उं द्रवासी प्राप्ती ॥ आवकासी अगम्य निश्चीति ॥
 अनकैरा रिजितरति ॥ २४ ॥ ब्रह्म स्थिति आति दुर्गम हे उं द्रवासी कचले वर्म साध
 काचे साधा व्याकाम ॥ उपावसुगम पुसनु ॥ २५ ॥ यवं साधका चियाहिना ॥ उं द्रवक
 कवळो निजतत्ता ॥ सुगम ब्रह्म प्राप्ति येहाता ॥ तो उपाव आयु ना पुसनु ॥ २६ ॥ एकदम
 निजधामा जाईल आता ॥ मग ब्रह्म प्राप्ती येहाता ॥ साधक गुंनति सर्वथा ॥ उपाय
 तत्ता कोण सागे ॥ २७ ॥ एको तिसा विनि ॥ पण ब्रह्म प्राप्ती चे सुगम साधना ॥ स
 प्रेम भगवद्भजन ॥ ते भक्त लक्षण हे ॥ २८ ॥ सुगम साधने ब्रह्म प्राप्ती ॥ आ
 वकासी जै सिखा भेजै स्या रिति ॥ साय ॥ जे देवासी चीन ति ॥ उं द्रवत दर्शी करि
 नुसे ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ उं द्र उवाच ॥ सुदुष्करा मीमां मं न्यथा गवयो मना ॥ य
 था जसा पुमान् सिध्येत न मे ब्रुवत्यजसा ॥ १ ॥ टिका ॥ पूर्वार्धाई ब्रह्म स्थिति
 सा गित छिते दुर्गम गति ॥ भो व्याभाविका आवका प्रति ॥ ब्रह्म प्राप्ती साधने ॥ ३०
 वस्तु व्यक्त ना आव्यक्त ॥ से विप्र गट नान के गुप्त ॥ मकळे मूर्त ना आमूर्त ॥ विसाधका
 तेथे नेचे ॥ ३१ ॥ जे सुख ना सुक्ष्म होय ॥ जे आहे ना हि दुःख न साहे ॥ तेथे पाहते

पाहाणे दो कि आय ते साधका होय के विसांध्य ॥ ३३ ॥ जे दिस ते ब्रं हलणे वे मवेत
माया रूप नावे ॥ आता नाहि चो हलणे नी साडावे ॥ तेणे हि नाडावे साधकि ॥ ३४ ॥ जे आ
कारना न के भुंया ॥ जे येन दिचे ध्येय ध्यान ॥ या सी लाजे श्रेय शान ॥ या ते साधन
स्पर्शना ॥ ३५ ॥ जे न चढे राहा व्याहात ॥ जे ना तुडमौ ना आत ॥ अनुवाहे रि नाहि जे ये ॥
काय साधकि ते ये धरोवे ॥ ३६ ॥ नाहि जान बाहर विचारा ॥ ते ये काय धरोवे नि
धारा ॥ जे ये नि धारु हि पुरा ॥ धरा व्यापु रा होस्त धरी ॥ ३७ ॥ साधकि स्थिर करा
व्यामन ॥ काहि न दिसे आवळ वन ॥ ते ये आनाले आशान जन ॥ या सी दुस्त रजा
ण हा योग ॥ ३८ ॥ या परि नी जाल प्राप्ति ॥ कदा न चढे अब गहाति ॥ मज तब मान ले श्री
पति हे आस स्थिति दुस्त ॥ ३९ ॥ सी या ब्रं हल चो ब्रं हल प्राप्ति ॥ आशान आप्रया
स या वति ॥ ते सी सुगम साधन स्थिति स ॥ साग श्री पति छ पावु वा ॥ ४० ॥ अनुवा नि ॥
ज धा मा प्रयाण ॥ पाडिले आसे जाति हरेण ॥ ये ये त राव या आशान ॥ सुगम सा
धन सागी जे ॥ ४१ ॥ हलणे नी घात ले लो यांगण ॥ भावो नि धरि ले श्री चरण ॥ तुज गे
हिया आशान जन ॥ तारा व्या साधन सुगम साग ॥ ४२ ॥ पोहू निया परिस पाय ॥

उत्तरा स्त्रीयावा का आति सोपारा नैसीया उपाय प्रकारा ॥ सारंगधरासागीजे
 ४३ तुझ्या टाईस द्वाव धरणे ॥ आनी नेण तिवा द्वा शान ॥ ते से जे आशान जन ॥ ताराव्या
 साधन सुगम साग ॥ ४४ मनो नीग्रहो आति कठिन ॥ साधकाने मवेना सं पूर्ण ॥ तेचि
 अर्थी वैनी रोपण ॥ उं दुव आपण सागनु ॥ ४५ ॥ श्लोक ॥ प्रायसः पुंडरिकाक्ष युंजतो
 योगीनो मनः ॥ विषिदं स समाधाना मनो निग्रह कर्षितः ॥ २ ॥ टिका ॥ ते के श्री ह
 ह्म कमल नयना ॥ सिन ता साधक साधना ॥ कदा ना कळे वे मना ॥ ते हि विवंचना
 आवधारि ॥ ४६ निग्रहावयानि जमन साधक साधीति प्राण ॥ सासी हि छुका ॥
 नियामन ॥ जाय निघोन तहा ॥ ४७ ॥ सा लुनीये कांति आसन ॥ मनो निग्रहो ॥
 जे सावधान ॥ सासी ही टकुनिया मन ॥ जाय निघोन चपळ हो ॥ ४८ ॥ मनो निग्रही
 आही हाटि ॥ जणो निनी घाले गीरि कपाटि ॥ सासी टको निमन सेवटी ॥ जाय उय
 उटि चपळ हो ॥ ४९ ॥ ये कि आकाश वयामन ॥ सज्जुनिया बैसले अंभ ॥ तव मन के
 ले आंत आन ॥ ज्या गति स्वप्न अंत मया ॥ ५० ॥ मनो निग्रह करि तो देख ॥ मन ख
 वळले आधिका आधिक ॥ मनो ने मीस शान लोक ॥ सिन ले साधक साधनी ॥ ५१ ॥
 वारावा धवे ल मोटे ॥ आग्नि प्राश वे ल आवचे ॥ समुद्र घोट वे ल घोट ॥ मन आत्म

निष्टेतहीनेये॥५२॥ आकाशकरवेळनौघडि॥ माहोमस्वा॥ धनेळुडि॥ शुभ्याचि मुरडवे
उडनरडि॥ तरेमनायावोढीआणिवार॥५३॥ काभुजिकवेळनवृता॥ श्रीभुवनीलाभे
लसता॥ परिनिग्रहाचिवार्ता॥ तुजविलअभ्युताघडेन॥५४॥ मनज्ञापसांताकाळ
छळि॥ मननेमस्ताचानेमढळि॥ मनवचिगामाजिमहाबळि॥ करिरागोडीधैयाचि॥५५॥
मनईहातेतळीपाडि॥ मनब्रंहातेहटेनाडी॥ ऐसीमनाचिवोरवटिखोडि॥ आपला
त्रोढीनावे॥५६॥ साधनीसाधकसिनता॥ मनोजयोनयेचिहाना॥ तुजवाधुनिआ
भुता॥ मननह्वेनानावे॥५७॥ आहृतदाधुनिनिर्वडि॥ मनोजयोआनिताजोडि
तवसिद्धिचिहटेआडडि॥ नेलेहिमननाडिसाधका॥५८॥ तुझिल्लपानकृताजा
ण॥ साधकाकदानगवेमन॥ तुत्तुष्टलयाजनाईन॥ मनपणामनस्वयेविसरे॥५९॥
सर्वभावेनरिघत्तारारण॥ साधकाकदानगवेमन॥ मनोनिग्रहार्थजाण॥ तुझ्या
चरणारारणरिघावे॥६०॥ लोक॥ आथातआनंददुष्टं पदांबुजं हंसाभयेरमि
रविंदलोचन॥ सुखंतुविश्वेश्वरयोगकर्मनिस्तंभाययामांविहितानमानिना॥३॥

कमलापतिकमलवदना ॥ कमलाख्याकमलनयना ॥ नाभीकमनीकमलासना ॥ तुवात्रं
 ह्यश्यानाआपीलि ॥ ६७ ॥ शानुसेचरणीचेचरणामृत ॥ तुसीलयाज्यासीहोयप्राप्त
 मनोजयोसाध्याओंकीत ॥ ज्ञोहोयविरक्तभवभावा ॥ ६८ ॥ तुस्याचरणंमृत
 गोडि ॥ मनोजयानेतकाळजोडि ॥ आधीव्याधीभवंपारातोडि ॥ स्वानंदकोडीसा
 धका ॥ ६९ ॥ सरवळसाधनाचेंसार ॥ योगसौंदर्यविवेकसधर ॥ सासाराचेहि
 निजसार ॥ तुसिभक्तीसाचारभीरुस ॥ ७० ॥ जणोनिभक्तीचेरुस्यभज
 नप्रेमात्तुध्वलेमानस ॥ तेचिविशाननाहंस ॥ भजनसारांचासेविति ॥ ७१ ॥
 कायावाचाआणोमन ॥ सद्गुरुवरुदासंपुत्र ॥ लेसीयाभक्तातुसेचरण ॥ स्वा
 नंदेपुर्णदुभति ॥ ७२ ॥ धर्मआर्थकाममोक्षासी ॥ सांगसाधनसिद्धिसासी ॥ वि
 कलजालियासाधनासि ॥ येसाधकासिआयावो ॥ ७३ ॥ तैसीनवतुसिभक्ति
 नके ॥ तुजभजताजीवभावे ॥ भक्तसिक्कदाविद्वानयावे ॥ सेखीभक्तनागवेवि
 द्यासी ॥ ७४ ॥ जैस्योआणीरवयोतासि ॥ तेभेष्टहोययेसावकासी ॥ तहीविद्वेभ

कासी ॥ धीरया व्यासी न धरति ॥ ६७ ॥ पडे तापं व्यानना चिदा नी ॥ होमदगजा भंगानी
ते विनु स्या भावार्थ भजति ॥ तस्य धुकि धारि विष्णु सि ॥ ७ ॥ विद्यासी ॥ ७० ॥ यणे नि
भय ये निज संपन्न ॥ तु स्या चरणि आनन्य शरण ॥ या सि ना त के जं न म म र ए ॥ मा
ई ते र विघ्न ते कै ये ॥ ७१ ॥ योगे भावे जे आनन्य शरण ॥ या सी तु से निज चरण स्या
नंदे करि ति पूर्ण ॥ जे विकार धेनु व द्या सी ॥ ७२ ॥ प्र कि सरो व रि निर्मल न व विध
अ छे र सी क ज क ॥ ते थे नु से म र ए क म क ॥ विकार से के व उ भावार्थ स्वर्य ॥ ७३ ॥
ते थे स्या नु भ वि क भ म र ॥ इ पा उ निया ता रु व र कुं यं के वे दि ता के रा र ॥ आ मो
द सारे से वि ति ॥ ७४ ॥ ते थे वि वे वि प र म हं स ॥ ते स रो व रि जे राज हं स ॥ चरण
क म बि क रू नि वा स ॥ आ मो द सु र स से वि ति ॥ ७५ ॥ हो का आ र्त जि शा स भ
र्था र्थी हे हि ते स रो व रि व स ति ॥ प रि क म का मो द ने ए ति ॥ त रि ते की उ ति क म वा न
कि ॥ ७६ ॥ रे सी या भो व्या भ कि सी ॥ तु ना रि सी र रि के धि ॥ य व ने जे ला ग दे भ कि
सि ॥ आ पा वो ह्या सी अ से न ॥ ७७ ॥ भा वे क रि ता नु से भ ज न ॥ तु भा वा र्थ हो सी प्र
सं न ॥ तु स्या प्र सं ए ता नु से च र ए ॥ स्वानंदे पूर्ण व र रा ति ॥ ७८ ॥ तु वि श्व मु नि वि

श्वेश्वर तु ज्ञेयादिकाचार्येश्वर ॥ तुझा जाळिया अभयकर ॥ भक्ता भवभार स्पर्श
 ना ७७ ॥ तुझी भक्तीने त्याचे कर्म ॥ तुझा भावो तो त्याचा स्वधर्म ॥ तुजनैवेद्य आर्प
 ले उतम ॥ तो चियागु परम भक्ताचा ॥ ८० ॥ निंयस्मरणे तुझे नाम ॥ हाचि भक्ता
 चा जपसंभ्रम ॥ तुझे कीर्तन मनोरम ॥ ते समाधि परम भक्ताचि ॥ ८१ ॥ एवं
 भक्त करि निजे कर्म ॥ ते ते तु होमि पुरुषोत्तम ॥ उपासी तु तिष्ठसी मेघः शाम
 त्यासि भवभ्रम स्पर्शना ॥ ८२ ॥ अथ जन्म मुखे ॥ भक्त जारि सी निजाम
 सुखे ॥ तेणे सुखाचे नीह रसे ॥ आरि स तोरो दळति ॥ ८३ ॥ एवं आनपेक्षा
 त भजन ॥ तुनीज सुखे करि सिद्धि ॥ तुजम ॥ निघति जेशरण ॥ ते
 मायेगे जाण मोहिले ॥ ८४ ॥ जे तुझ्या चरण सीजे विमुख तेच स्पृहीहि
 ने देखति सुख ॥ चढते वाढते दुःख ॥ मायेगे ते मुखे केले ॥ ८५ ॥ सजुनि
 तुझे चरण ध्यान ॥ करी तायोग क्रिया ध्यान ॥ ते ते साधका होय बंधन
 ॥ ८६ ॥ स्वकळे आभिमान शत्रुते ॥ ८६ ॥ पूर्वभक्तो कि या अंतिल चरण ॥ तेन्मा

यथा विहीतानमाननीनः। हाभीमजोकी बाअंतिल चरण। उपक्रमुनीयाआप
मण यंडितां चाक्षानाभीमान आभक्तपण प्रकाश्री॥८७॥ आलीशपातेउगली
योगी आलीप्रवर्तक कर्ममार्गी। आलीश्रीबीजगी। आमनीभागीअतिहुं
हु॥८८॥ लोककेवळ आक्षान तेसेआलीनहोआपण आमचेवचनप्रमा
न सर्वोधिअणसर्वासी॥८९॥ आलीशपातेहेमानुनीदठ। क्षानाभीमाने
केलेमुठ। पांडितेहोउनिगर्वा। खडुवाडमोगीति॥९०॥ आभीमा
नहैसावैरि। आननाहिसंसादी। क्षानाभीमाने। करि धालिदुस्तरि
सक्षान॥९१॥ आसौहअभक्तानि। जेमुकुलेभक्तीपंथा। यात्यागीना
नापरेचिवेथा देहअहंतासोसीति॥९२॥ जेहिभक्तिसीविकोनिनीत
जालेअनन्यराखणंगत। यासीतामितानुजगंनथ। नीजयुखेनी
जंभक्तनाहविसी॥९३॥ तुझेजेकाभक्तजन। जेहिभक्तीसीविकि। आप्रा
ण यासीनमागताअंगुगीनसहजजाणटसावे॥९४॥ तुझेकरितानीजभजन

भक्ताकदानवाधिविघ्न॥सुखेहोति सुखसंपन्न॥हेनवलकोणगोविं
दा॥७५॥**श्लोक॥** किंचिन्मम्युतनवैरतदशेषबधोदासेषनन्यपरतेशु
यदात्मसहं॥योरोचयन्महभृगोः स्वयमीश्वराणं श्रीमत्कीर्ति
रिटनटपिडीतपादपिठं॥**श्लोक॥** विघ्ननवाधितुसीयाभक्तारी
हेनवलनकेरुशीकेरी॥**श्लोक॥** तुमुहोतिभक्तप्रेमासी भक्ताधीनहो
सिसर्वदा॥७६॥ जेनुजमननराण॥तुसर्वदायाधिन॥तेभीआ
र्थिचेनिरोपण॥उद्धव आपणसंगतु॥७७॥ होउनीनीजदासाआधि
न मंध्यरात्रीपुरविसी आभसखेतुजनमीछेभोजन॥भुकेल्यापा
णभानिचे॥७८॥ उभयसेनेचिदेहडि॥रांन्ने सुटतिआति कडाडीने
थे सोसीसीरथीचिवोढी॥सरवीरथाचिघोडितुधोसी॥७९॥ तुझाम
कुंदुनाकथेवेदासि॥तेथेभक्ताया॥चाबुकखोविसि॥देखतासकविक॥६॥

रायासी रणिचोडे धुसीनिजांगे ॥१००॥ वागहोर धर नीदाति ॥ चाहिचोडि चौहाति
धुतान लाजसिभीपति ॥ भक्ताधिन नीभ्योतिनु उंझंसेसा ॥ १०१ ॥ वंदिसोड बिडेया
सि तोउग्रसेनु स्यामिकरिसि ॥ उचीष्टधर्माचेकाडिसि ॥ सेरिगार्डारन ॥ सिसि
नंदाच्या ॥ १०२ ॥ आसोनु थोर थोर रायामात ॥ नुचिमीडनि गोवाआआनु उभे
उभे साचारवासी भातु ॥ छंदेनायतु सानेनि ॥ नहणसी सोवळेवळे प्रस
क्षकेवळगोवळे ॥ सानेउचीष्टकवळे ॥ सानंदमेळेढुळसी ॥ १०३ ॥ द्रोपदिचि
ये आतिसाकडि ॥ नेसनितु जाला सीलगाडि ॥ गोपीकान्वियेनीजआवडि
तुकंडोविकडिनाचसी ॥ १०४ ॥ पूर्णचंद्रमो ॥ सापाहि ॥ काटामोउलागोपिका
चापाडि ॥ तोपाय धरनिहातिदाहि ॥ तुकाटालेवळा हिकाढोसी ॥ १०५ ॥ स्वा
दिवाहिलेहृदुर्वास्यासी ॥ द्वारपाळनुवळिनापासी ॥ तेसाभक्ताआ
धिनहोसी ॥ वचनेवर्तसीदासाच्या ॥ छंदेवानुतेसेहाणसी गोवळ
तुसंय चिमानसी ॥ नेनुजनघडे रसीकेसी ॥ तुपुंजपहोसीसुरवरा ॥

गीतस्के

आ०२८



२॥

२॥

४
पूर्वश्लोकिचेपः श्रीमत्किरीटीनटपीतिपादपीठं १० ईदृचंद्रआलिम
हिंद्रं ब्रंलाहृहस्पतिशंकर॥ तेसेपूंज्यजेकार्थर॥ तेहितुसेकिंकरश्रीकृष्ण॥
तुसीआनतीचिपादपिटि॥ या-यामुगुटमलीयाकोटि॥ घर्षणिशनकारउ
टि॥ नमस्कारिदाटिसुरवरा॥ १०॥ तुसीआशानमानीता॥ ब्रंलादिकार्थेमा ये
था॥ आंदुवाजेजिनहता॥ ईदराचिकथानेकोण॥ ११॥ तुसीआइपे१११गेजाण
वायुवागविनेमस्तप्राण॥ सर॥ कीदन्मान॥ तुसिअंशेनेगोविंदा
१२॥ तुसीअंशेनाभयभागि॥ स॥ यदनुअंधि॥ तुसीअंशेनानिजयो
गि॥ वरषिजेमेचिजयकाचे॥ १३॥ तुसीअंशेपिआगाधथोरी॥ स्वयेमस्मवं
दिसीरि॥ तेहिसकाचप्रचयोकरि॥ आंशेवाहेद्रिकदाननिधि॥ १४॥ आंशेका
मितवनंदाचोकिंल्लारि॥ उग्रशेनाचीसेवाकरि॥ मासियेकडिथोरीमी
थ्यामुरारिहणसीउ॥ १५॥ तुवापाडुनिकाचाचेदाल॥ गुरुपुंनआणीलाये
थईदृकेलामानहान॥ गोकुचिआइतवरराताशीका॥ १६॥ ईदराचिगे

१७
 सिंकाईसी॥ होउनि वंछे वंछा पासी वेउलाविले विधासासी॥ सेरवीगोवउ
 होसी नंदाचा॥ १७॥ बाणकै वारा लागुनि॥ सीन आला कोपोनी॥ तिताजी तिला
 अंधंक्षणी॥ सारंगपाणी ईश्वरेश्वरा॥ १८॥ तुसी भे रिघ्यावया कारणे॥ उ त्कंय
 वाहिजे नारायणे॥ ब्राह्मण आपसुं डारतरे॥ तुसी भे रिवां छल सर्वादा॥ १९॥
 तुभक्त काज पंचानना॥ संसकरा वया अर्जुना॥ क्षीरसागरि निघो निजाणा
 कृष्णनारायणा भेटले॥ २०॥ दोहि चिमोद चिपरवाडि॥ संनजाणति आधडि
 दोघाभीटि पडु लिंगादी॥ निजासु गणि आभिंभ॥ २१॥ कृष्णामीळाळाना
 यण॥ कीनारायणा माजि श्रीकृष्ण॥ दोघाहिना हि दोनी पण॥ स्वरूप परिप
 ण आरुपडे॥ २२॥ तो तुभक्त काज केवारे॥ तिला विग्रह अवताधरे॥ आ
 वतार धरि सी नाना पणे॥ दिनो द्वा रि श्रीकृष्ण॥ २३॥ या परिगार सीकेसि
 उगाध महिमा तुज पासी॥ येचि अवतारि आलासी॥ प्रतिति सी पै आला २४॥

५४
आखंड आरे स्वयं चिच्छेति । आना वृत्त शानस्तुति । आद्यानेह चानाहि च्युति आ
च्युतनि श्रीति याहेतु ॥ २४ ॥ ऐसा नु अनंत अपरां पर । नियंसा ईश्वरा चाईश्वर
तहीनु भक्त करण कर । तोहि प्रकार आवधारी ॥ २५ ॥ श्लोकार्थ येरोच्यु
साहसृगैः स्वयं श्रीश्वराणां ॥ देवा दुर्लभ नो नमस्कारा । तो नुरी सा आणिव
भरो ॥ खेवे देसी रामचंद्रा लीला आवतारा वे निनोदे ॥ २६ ॥ तुवा बोलावेत्त पा
कर नि । या लागी वेदु तुष्टे सावधानि । तो तुवां भराचो काणि । गुज आलोचु नो
सागसी ॥ २७ ॥ तुझे शान न कळे वे । तो तुविचार पुस सिबां नरा आनु
सरोनि सा न्यामंत्रा उघाय दारवर्तरी ॥ २८ ॥ यं शाचि आवहनि प्रांजेवे
कदान येसी यं शकळे । तो तुवां नराचि वन फळे । खासी हंपा बळे संप्रे
मे ॥ २९ ॥ ऐसे भक्त चि संप्रेम । तु प्रतिपादी सी मेवः राम सा तुज मा
जिवि राम तु आसाराम जगवा ॥ ३० ॥ तव शेष बंधो ॥ तु अंतर यामी
निज सरवा परमा सा हृदय स्त देखा तुज मा त्रिभुतां भौतिका भीम

आवाका आसेना ॥ ३१ ॥ तुजडा ते येव विता ॥ मुळ ते शानदाता ॥ सकळ जिवा
आहंदविता ॥ तुमीया चित्तसे ताजगनोदे ॥ ३२ ॥ मातापियाचे संख्यत
देखा ॥ तो प्रपंच युक्त आवाका ॥ तुह्मदयस्तनी जसखाखा ॥ सकळ लोकासु
स्वहाता ॥ ३३ ॥ ऐसा तु सर्वांगी हृदयसु ॥ सर्वबंधेते आति समर्थु जा
णसी हृदई धावतां तु स्वामी लयावें तुमुदिना ॥ ३४ ॥ व्यापरी गारपी
केरी दिनदयाळ निजभकारि ॥ ऐनोयनाउ निर्यामीसी ॥ कोरा
धनांधासी भजेल ॥ ३५ ॥ तत्त्वरीत्या लहयिते श्वरमाश्रितानां
सर्वार्थदंसुत विद्विस्तजेत कोनु ॥ कोवा भजे किमपि विस्मयेनु
भरुं सै विवाभवे भनवयाद रजें जुषांनः ॥ ५ ॥ टिका ॥ विधाता आणिक
रिहर हे मायागुणी गुणावतार ॥ तुमाया नियें ताई श्वर ॥ भक्तकर
णाकर सुखदाता ॥ ३६ ॥ या तुही करिता निजभक्ति ॥ चारि पुरषा

७१
ध्याहीमुक्ति। भक्तासीलोगगणयेति। येकडिअर्थप्राप्तिनिजभक्ता। ३७। निजभक्ता।
चेमनोगत। तु सर्वशरणभगवंत। भक्तदृष्टयेदृश्यस्थ। जाणोनिसर्वाथतेरेसी। ३८।
भावार्थावेभोक्तेपण। जाणतातुयेकप्रीहृदम। तुजवेगकेलक्षणआण। कोणसीजा
णकेनेना। ३९। ऐसास्वामीतुउतमोत्तम। तुजेनीसाधकासुखपरम। आहिरवना
हिलुजसम। तुस्वामीपुरखोत्तमसर्वो। ४०। तुसर्वाचास्वामिहोसी। परिहृपाठ
निजभक्तासी। आमीविषदिनानावाधेसी। तुवज्रहृदासीरंक्षीले। ४१। तुजे
भक्ताचिकपाप्रबक। उत्तानवरणवेताणबाळ। करनीयावेराग्यसीक। क
वासीआढकचुनाकेले। ४२। रात्रुखंभुविभीशरग। तुजजाळाआनन्यशरण।
सानेकपेस्तवजाण। सकुचिरावणचंद्रगंला। ४३। छुउनीबापिलेबळीसी
सेखिक्तपाउपजलिकेसी। ह्याचेद्वारिदारपाठहोसी। निजलाजेसीसांगेनि। ४४।
ऐसीभक्तकपातुजपासि। भक्तदृष्टयस्थतुजाणसी। ऐसीयासांगेनिनी
निजस्वामीसी। कोणधनांधासीसेचिल। ४५। देहादिईद्रियांसुखभासे
तेतेतुष्टेनिसुखलेसे। तोतुसकळसुखासमावेसे। प्रसन्नआनयासेनिज



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com